B. Ed Ist year

24/04/2020

Sub- Growing up AS A Learner Friday

Topic - Types of Personality

प्राचीन समय से ही व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है। प्राचीन धर्मशास्त्रों में सात्विक, राजसी, तामसी प्रवृत्ति का वर्णन किया। और व्यक्तित्व भी 'तीन प्रकार' के बताये।

'हिप्पोक्रेटस / गॉलिन ने शारीरिक द्रवों' के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण '4 समूहों' मे विभाजित किया।

1. कफ प्रवृति → धीमे / निर्बल / निरुत्तेजित
2. काले पित वाले → निराशावादी
3. पीले पित वाले → चिड़चिड़ / शीघ्र क्रोधित होना
4. रुधिर वाले → प्रसन्न / शीघ्र कार्य करने वाले

'थार्नडाइक' 'विचार की दृष्टि' से तीन भागों में विभाजित

1. सूक्ष्म विचारक → कार्य करने से पूर्व उसके गुण / अवगुणों पर विचार करना
2. प्रत्यय विचारक → शब्द / संकेतों के आधार पर कार्य करना।
3. स्थूल विचारक → क्रिया पर अधिक बल

'शैल्डन' 'शारीरिक गुणों' के आधार पर 3 भागों में विभाजित

1. एन्डोमोरफी → कोमल। मोटे शरीर वाले पाचन क्रिया तीव्र
2. मैसोमोरफी → लम्बे / चौड़े / स्वास्थ्य बड़ा अच्छा
3. एक्टोमोरफी → दुबले / पतले / लम्बे पाचन शक्ति कम

'क्रेश्मर' 'शरीर रचना' तीन प्रकार

1. पाइक्निक → मोटे / गोल / छोटे / बहिर्मुखी / घनिष्ठता स्थापित करने वाले।
- एथलैटिक → अन्तर्मुखी / हष्ट / पुष्ट / स्वस्थ
- एसथैनिक → संघर्षशील / पतले / लम्बे

Scanned with CamScanner

स्प्रैंगर कार्य / स्थिति के आधार पर ६ : भाग

1. **सैद्धान्तिक** — दार्शनिक और वैज्ञानिक और सत्य के पुजारी।
2. **आर्थिक** — व्यापारी श्रेणी / हर वस्तु का मूल्यांकन आर्थिक दृष्टि से।
3. **धार्मिक** — सन्त, महात्मा, पुजारी और सरल जीवन जीने वाले।
4. **कलात्मक** — कला प्रेमी, कलाकार
5. **सामाजिक** — समाज सुधारक / सामाजिक कार्यकर्ता।
6. **राजनैतिक** — राजनीतिज्ञ / दूसरों पर सत्ता और प्रभुत्व स्थापित करने वाले।

जुंग (Yong) 'मनोवैज्ञानिक दृष्टि' व्यक्तित्व तीन प्रकार

1. **बहिर्मुखी** → व्यवहारकुशल / आशावादी / अपने हितों का बलिदान करने में सदैव तत्पर
2. **अन्तर्मुखी** → लज्जालु / चिंताग्रस्त / शीघ्र घबराने वाले स्वभाव आज्ञाकारी
3. **उभयमुखी** → बहिर्मुखी / अन्तर्मुखी दोनों के ही गुण

व्यक्तित्व का विकास

शैशवावस्था में

- ज्ञानेन्द्रियाँ बहुत अधिक क्रियाशील / वातावरण (चारों ओर) से प्रभावित।
- "शैशवावस्था का शिशु के व्यक्तित्व पर स्थायी प्रभाव" — फ्रायड

बाल्यावस्था में

- ज्ञानेन्द्रियाँ / कर्मेन्द्रियाँ पूर्णतः विकसित।
- जिज्ञासा की प्रवृत्ति।
- अत्यधिक / समूह समायोजन की भावना का विकास।
- अच्छाइयों / बुराइयों दोनों से प्रभावित।

किशोरावस्था में

- शारीरिक परिवर्तन तीव्र गति से।
- नयी रुचियां विकसित।
- मैत्रीत्व की प्रवृत्ति।
- कल्पना जगत में विचरण।

B.R.C. Deoband

ARP Pro — Sapna Tyagi